LATEST EDITON

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

(REET मुख्य परीक्षा हेतु)

2 LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

भाग-3a सामान्य हिंदी + शिक्षण विधियाँ

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान 3rd ग्रेड

REET LEVEL - 2

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 3 (A)

सामान्य हिंदी + शिक्षण विधियाँ

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order at ➡ https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes

Whatsapp Link – https://wa.link/hx3rcz

Contact us at – 8233195718 + 8504091672

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

हिन्दी

1. हिन्दी वर्णमाला ज्ञान 1

2. शब्द विचार 5

- संज्ञा , सर्वनाम, विशेषण, क्रिया ,अव्यय

3. विकारी शब्द 24

- लिंग
- वचन
- काल
- कारक
- वाच्य
- विकारी शब्दों का रूपांतरण

4. शब्द के प्रकार 35

(i) उत्पत्ति के आधार पर

(ii) रचना के आधार पर

(ii) अर्थ के आधार पर

- एकार्थी
- अनेकार्थी
- विलोम
- पर्यायवाची,

- वाक्यांश के लिए एक शब्द
- युग्म शब्द इत्यादि

5. संधि 86

6. समास 95

7. उपसर्ग एवं प्रत्यय 115

8. शब्द - शुद्धि 124

9. वाक्य शुद्धि के प्रकार एवं उदाहरण 130

10.वाक्य विचार - वाक्य के अंग, प्रकार, रूपांतरण इत्यादि 136

11. विराम चिह्न - प्रकार एवं प्रयोग 141

12.मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ 145

13.शब्द शक्ति 160

14.अपठित गद्यांश के भाव एवं व्याकरण से संबंधित प्रश्न 163

15.अपठित पद्यांश के भाव एवं व्याकरण से संबंधित प्रश्न 177

16.पारिभाषिक शब्दावली 187

17.शिक्षण विधियाँ

- हिंदी भाषा की शिक्षण विधियाँ
- भाषाई कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना) एवं भाषाई कौशलों का विकास
- हिंदी भाषा शिक्षण के उपागम
- हिंदी शिक्षण में चुनौतियाँ
- हिंदी शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री एवं उनका उपयोग
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन विधियाँ
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

अध्याय – I
हिंदी वर्णमाला ज्ञान

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. **मौखिक या उच्चारित भाषा-** मौखिक भाषा की सूक्ष्मतम इकाई ध्वनि होती है। वास्तव में ध्वनि का संबंध सुनने व बोलने से है। यह भाषा उच्चारण पर आधारित होती है। उच्चारण करने के लिए मानव के जो मुख्य-अवयव काम करते हैं वह उच्चारण अवयव कहलाते हैं।

2. **लिखित भाषा-** लिखित भाषा की सूक्ष्मतम इकाई वर्ण होती है। वर्ण का संबंध लिखने व देखने से है। वर्ण ध्वनि रूपी आत्मा का शरीर है।
लिखित रूप से भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हो वर्ण कहलाते हैं।
जैसे एक शब्द है - नीला।
नीला शब्द के यदि टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- नी + ला
अब यदि नी और ला के भी टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- न् + ई तथा ल् + आ।
अब यदि न ई, ल् आ के भी हम टुकडे करना चाहे तो यह संभव नहीं है। अतः ये वर्ण कहलाते हैं।
ये वर्ण दो ही प्रकार के होते हैं- स्वर तथा व्यंजन
वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अतः वर्ण ही भाषा का मूल आधार है।
हिंदी में वर्णों की संख्या ५५ है।

वर्णों को दो भागों में बांटा जाता है

1. स्वर
2. व्यंजन

1. **स्वर** - स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती है, अर्थात वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते हैं।
स्वरों की संख्या 11 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
मात्राओं की संख्या 10 - क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।

2. **व्यंजन** - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं।
व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

विशेष

1. हिंदी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
2. हिंदी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
स्वरों का वर्गीकरण पाँच भागों में बांटा जाता है।

I. उच्चारण अवधि के आधार पर-

1. **लघु स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- अ, इ, उ, ऋ
   इन्हें मूल स्वर और ह्रस्व स्वर भी कहते हैं।

2. **दीर्घ स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है अर्थात दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
   इन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं।

3. ओष्ठाकृति के आधार पर –

1. **वृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।

   जैसे- उ, ऊ, ओ, औ

2. ***अवृत्ताकार स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत के समान गोल न होकर फैले रहते हैं। अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।*
जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

3. ***जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर:-***

1. ***अग्र स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशील रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं।*

   जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ

2. ***मध्य स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं।*

   जैसे- 'अ'

3. ***पश्च स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला (पश्च) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं।*

   जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. ***मुखाकृति के आधार पर -***

1. ***संवृत स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संवृत स्वर कहलाते हैं।*

   जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ

2. ***अर्द्ध संवृत स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं।*

   जैसे- ए, ओ

3. ***विवृत्त स्वर-*** *विवृत का अर्थ होता है 'खुला हुआ', वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य पूरा खुला रहता है अर्थात सबसे ज्यादा खुला रहता है विवृत स्वर कहलाते हैं ।*

   जैसे- 'आ'

4. ***अर्द्ध विवृत्त*** *- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं।*
जैसे- अ, ऐ, औ

5. नासिका के आधार पर-

1. ***निरनुनासिका स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती है।*

   जैसे- *सभी स्वर*

2. ***अनुनासिक स्वर-*** *वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग किया जाता है, अर्थात मुख के साथ-साथ नासिका से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक। सानुनासिक कहलाती है।*
जैसे- *अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ऐं, ओं, औं*

व्यंजनों का वर्गीकरण

I. ***उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-***
ध्वनियों के उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है। यह प्रयत्न तीन प्रकार से होते हैं-

1. ***स्वरतंत्री में कंपन्न-*** *स्वरतंत्रियो में होने वाली कंपन्न, नांद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं - सघोष और अघोष*

अघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन नहीं रहता है वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती हैं।
वर्गीय व्यंजनों के पहले व दूसरे व्यंजन अघोष होते हैं। (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा ष, श, स)।

सघोष वर्ण- *जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन रहता है वे सघोष ध्वनियां कहलाती हैं।*
वर्गीय व्यंजनों का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन 'सघोष होता है।

(ग, घ, ड़, ज, झ, ञ, ड़, ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म) अन्तः स्थ (य, र, ल, व) तथा ह । सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा-** उच्चारण में वायु प्रक्षेप या श्वास वायु की मात्रा की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं-

   1. **अल्पप्राण**
   2. **महाप्राण**

1. **अल्पप्राण**- जिनके उच्चारण में श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती, वह अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण व्यंजन हैं।

   जैसे- क, ग, ड़, च, ज, ञ, ट, ड़, ण, त, द, न, प, ब, म।
   अन्तस्थ (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण ही हैं।

2. **महाप्राण**- महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।

   जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, थ, ध, फ, भ और ष, श, स, ह।

3. **मुख अवयवों द्वारा श्वास को रोकने के रूप में-**

   ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीव या अन्य मुख्य अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं इस आधार पर व्यंजनों का निम्नलिखित विभाजन किया जाता है।

   स्पर्शी व्यंजन- ये कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्ष से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।

   उदाहरणार्थ-
   क वर्ग -क, ख, ग, घ, ड़ (कंठ से)
   च वर्ग -च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
   ट वर्ग - ट, ठ, ड़, ढ़, ण (मूर्धा से)
   त वर्ग - त, थ, द, ध, न (दन्त से)
   प वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

   नासिक्य- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं परंतु वायु पूरी तरह मुख से न निकल कर नाक से भी निकलती है उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं। ड़, ञ, ण, न, म नासिका व्यंजन है

   स्पर्ष संघर्षी - जिन व्यंजन के उच्चारण में वायु पहले किसी मुख-अवयव से स्पर्श करती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है उन्हें स्पर्षी संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
   च, छ, ज, झ स्पर्ष संघर्शी व्यंजन हैं।

   संघर्षी - जिन व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा वायु से होता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। यह चार है - ष, श, स, ह । इन्हें ही संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं।

   उत्क्षिप्त- उत्क्षिप्त शब्द का अर्थ है उछाला हुआ या फेंका हुआ। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्ष करके झटके से वापस आता है उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

   अतःस्थ - स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण य, र, ल, व को अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। अंतस्थ व्यंजनों का विभाजन निम्न है-

   पार्श्विक - पार्श्विक का अर्थ है-बगल का। जिस ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा श्वास वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है और वायु उसके अगल-बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

   प्रकंपित - प्रकंपित का अर्थ है कांपता हुआ। जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा की नोक वायु से रगड़

अध्याय – 2

शब्द विचार

संज्ञा (Noun)

संज्ञा (Noun) की परिभाषाः-

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं

दूसरे शब्दों में- कि सी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जैसे – प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि ।

वस्तुओं के नाम- अनार ,रेडियों , किताब, संदूक, आदि ।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार , नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता , बुढ़ापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु ' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं ,वरन उनके धर्मों का भी सूचक है।

साधारण अर्थ में 'वस्तु ' का प्रयोग इस अर्थ में नही होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं-

(1) व्यक्तिवाचक (Proper noun)

(2) जातिवाचक (Common noun)

(3) भाववाचक (Abstract noun)

(4) समूहवाचक (Collective noun)

(5) द्रव्यवाचक (Material noun

(1)व्यक्तिवाचक संज्ञा :-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

जैसे-
व्यक्ति का नाम-रवीना , सोनियां गाँधी , श्याम, हरि, सुरेश , सचिन आदि ।
वस्तु का नाम- टाटा चाय, कुरान , गीता ,रामायण आदि ।
स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार , जयपुर आदि ।
दिशाओं के नाम- उत्तर , पश्चिम , दक्षिण , पूर्व ।
देशों के नाम- भारत , जापान , अमेरिका, पाकिस्तान , बर्मा ।
राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय , रूसी, अमेरिकी।
समुन्द्रों के नाम- काला सागर , भूमध्य सागर , हिन्द महासागर , प्रशान्त महासागर।
नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा कावेरी , सिन्धु ।
पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्ध्याचल, कराकोरम ।
नगरों चोको और सड़कों के नाम वाराणसी , गया,चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग ।
पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद , धर्मयुग, इण्डियन नेशन ।
ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर –क्रांति ।
दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर ,जुलाई, सोमवार , मंगलवार ।
त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) जातिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा , जानवर , नदी, अध्यापक, बाजार , गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे - लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु , नदी , मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता है।

(3) भाववाचक संज्ञाः-

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी , आजादी , हँसी , चढ़ाई, साहस,

वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहें हैं।

इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनानाः-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(I) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य-	मनुष्यता	पुरुष-	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र-	शास्त्रीयता	जाति-	जातीयता
पशु-	पशुता	बच्चा-	बचपन
दनुज-	दनुजता	नारी-	नारीत्व
पात्र-	पात्रता-	बूढा-	बुढ़ापा
लड़का-	लड़कपन	मित्र-	मित्रता
दास-	दासत्व	पण्डित-	पण्डिताई
अध्यापक-	अध्यापन	सेवक-	सेवा

बनानाः-

स्वास्थ्य	स्वस्थ	स्वर्ण	स्वर्णिय
मामा	ममेरा	मर्द	मर्दाना
मैल	मैला	मधु	मधुर
रंग	रंगीन, रँगीला	रोज	रोजाना
साल	सालाना	सुख	सुखद
समाज	सामाजिक	संसार	सांसारिक
स्वर्ग	स्वर्गीय, स्वर्गिक	सप्ताह	सप्ताहिक
समुद्र	सामुद्रिक, समुद्री	संक्षेप	संक्षिप्त
सुर	सुरीला	सोना	सुहावना
क्षण	क्षणिक	हवा	वायुयुक्त
लड़ना	लड़ाकू	भागना	भाग
अड़ना	अड़ियल	देखना	दिखाई
लूटना	लुटेरा	भूलना	भुलक
पीना	पियक्कड़	तैरना	तैराकी
जड़ना	जड़ाऊ	गाना	गायक
पालना	पालतू	झगड़ना	झगड़ा
टिकना	टिकाऊ	चाटना	चटाई
बिकना	बिकाऊ	पकना	पका
अपना	अपनापन /अपनाव	मम	मेरा
निज	निजत्व, निजता	पराया	पराई
स्व	स्वत्व	सर्व	सर्वज्ञ
अहं	अहंकार	आप	आपनापन

3. क्रिया विशेषण से भाववाचक संज्ञाः-

मन्द- मन्दी; विलासी – विलासता

दूर- दूरी; शारीरिक – शरीर

तीव्र- तीव्रता;

शीघ्र- शीघ्रता इत्यादि।

५. अव्यय से भाववाचक संज्ञाः-

परस्पर-पारस्पर्य ;

समीप- सामीप्य;

निकट- नैकट्य;

शाबाश- शाबाशी;

वाहवाह- वाहवाही

धिक् – धिक्कार

शीघ्र- शीघ्रता

(५) समूहवाचक संज्ञा :- जिस संज्ञा शब्द से वस्तुओं के समूह या समुदाय का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- व्यक्तियों का समूह- भीड़, जनता, सभा, कक्षा; वस्तुओंका समूह- गुच्छा, कुंज, मण्डल, घौंद।

(5) द्रव्यवाचक संज्ञा :-जिस संज्ञा से नाप-तौलवाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु, द्रव या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- तांबा, पीतल, चावल, घी, तेल, सोना, लोहा आदि।

संज्ञाओं का प्रयोग

संज्ञाओं के प्रयोग में कभी-कभी उलटफेर भी हो जाया करता है। कुछ उदाहारण यहाँ दिये जा रहे हैं-

(क) जातिवाचक : व्यक्तिवाचक- कभी- कभी जातिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में होता है। जैसे- 'पुरी' से जगन्नाथपुरी का 'देवी' से दुर्गा का, 'दाऊ' से कृष्ण के भाई बलदेव का, 'संवत्'

से विक्रमी संवत् का, 'भारतेन्दु' से बाबा हरिश्चंद्र का और 'गोस्वामी' से तुलसीदासजी का बोध होता है। इसी तरह बहुत- सी योगरूढ़ संज्ञाएँ मूल रूप से जातिवाचक होते हुए भी प्रयोग में व्यक्तिवाचक के अर्थ में चली आती हैं। जैसे- गणेश, हनुमान, हिमालय, गोपाल इत्यादि।

(ख) व्यक्तिवाचक *: जातिवाचक- कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक (अनेक व्यक्तियों के अर्थ) में होता है। ऐसा किसी व्यक्ति का असाधारण गुण धर्म दिखाने के लिए किया जाता है। ऐसी अवस्था में व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा में बदल जाती है। जैसे- गाँधी अपने समय के कृष्ण थे; यशोदा हमारे घर की लक्ष्मी है; तुम कलियुग के भीम हो इत्यादि।*

(ग) भाववाचक *: जातिवाचक- कभी-कभी भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में होता है। उदाहरण - ये सब कैसे अच्छे पहरावे हैं? यहाँ 'पहरावा' भाववाचक संज्ञा है, किन्तु प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में हुआ। 'पहरावे' से 'पहनने के वस्त्र' का बोध होता है। संज्ञा के रूपान्तर (लिंग, वचन और कारक में सम्बन्ध) संज्ञा विकारी शब्द है। विकार शब्द रूपों को परिवर्तित अथवा रूपान्तरित करता है। संज्ञा के रूप लिंग, वचन और कारक चिन्हों (परसर्ग) के कारण बदलते हैं।*

लिंग के अनुसार

नर खाता है- नारी खाती है।

लड़का खाता है- लड़की खाती है।

इन वाक्यों में 'नर' पुर्लिंग है और 'नारी' स्त्रीलिंग। 'लड़का' पुर्लिंग है और 'लड़की' स्त्रीलिंग। इस प्रकार, लिंग के आधार पर संज्ञाओं का रूपान्तर होता है।

वचन के अनुसार

लड़का खाता है- लड़के खाते हैं।

लड़की खाती है । लड़कियाँ हैं - खाती हैं।

एक लड़का जा रहा है- तीन लड़के जा रहे हैं।

इन वाक्यों में 'लड़का' शब्द एक के लिए आया है और 'लड़के ' एक से अधिक के लिए। 'लड़की' एक के लिए और 'लड़कियाँ' एक से अधिक के लिए प्रयुक्त हुआ है। यहाँ संज्ञा के रूपान्तर का आधार 'वचन' है। 'लड़का' एकवचन है और 'लड़के ' बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है।

कारक- चिन्हों के अनुसार

लड़का खाना खाता है- लड़के ने खाना खाया।

लड़की खाना खाती है- लड़कियों ने खाना खाया।

इन वाक्यों में 'लड़का खाता है' में 'लड़का' पुलिंग एकवचन है और 'लड़के ने खाना खाया' में भी 'लड़के ' पुलिंग एकवचन है, पर दोनों के रूप में भेद है। इस रूपान्तर का कारण कर्ता कारक का चिन्ह 'ने' है, जिससे एकवचन होते हुए भी 'लड़के ' रूप हो गया है। इसी तरह, लड़के को बुलाओ, लड़के से पूंछो, लड़के का कमरा, लड़के के लिए चाय लाओ इत्यादि वाक्यों में संज्ञा (लड़का-लड़के) एकवचन में आयी है। इस प्रकार, संज्ञा बिना कारक-चिन्हों के भी होती है और कारक चिन्हों के साथ भी।

दोनों स्थितियों में संज्ञाएँ एकवचन में अथवा बहुवचन में प्रयुक्त होती हैं।

- <u>उदाहरणार्थ</u>

बिना कारक-चिन्ह के - लड़के खाना खाते हैं। (बहुवचन)

लड़कियाँ खाना खाती हैं। (बहुवचन)

कारक-चिन्हों के साथ- लड़कों ने खाना खाया।

लड़कियों ने खाना खाया।

लड़कों से पूछो।

लड़कियों से पूछो।

इस प्रकार, संज्ञा का रूपान्तर लिंग, वचन और कारक के कारण होता है ।

1. ***सामान्य भविष्य काल*** :- भविष्य काल की जिस क्रिया द्वारा यह बोध हो की क्रिया भविष्य में होगी सामान्य भविष्य काल कहलाता है ।

पहचान-

धातु में गा/गी/गे

उदाहरण -

- वह स्कूल जायेगा
- वह गाना गायेगा
- मैं पढ़ूंगा ।
- वह नाचेगी ।

सम्भाव्य भविष्य काल:- भविष्य काल की जिस क्रिया द्वारा उसके होने या करने में संदेह अथवा संभावना पायी जाये उसे सम्भाव्य भविष्य काल कहते है ।

शायद / हो सकता है / सम्भव आदि

Note:- कोई न कोई सम्भावना व्यक्त होती है ।

उदाहरण:-

- शायद मैं कल आऊँ ।
- शायद कल वह आगरा जाएगा ।
- हो सकता है कि रात में बारिश होगी ।

हेतू मदभूत भविष्य काल:-

Note:- एक काम दूसरे पर निर्भर करता है ।

उदाहरण:-

- छात्रवृत्ति मिलेगी तो मैं पढ़ूंगा।
- तुम स्टेशन पर मिलोगी तो मैं आऊँगा ।
- बस आयेगी तो में भी स्कूल जाऊँगी ।

• कारक

परिभाषा:- 'कारक' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'करनेवाला' किन्तु व्याकरण में यह एक पारिभाषिक शब्द है । जब किसी संज्ञा या सर्वनाम पद का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों, विशेषकर क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते है ।

विभक्ति:- कारक को प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ, जो चिन्ह लगाया जाता है, उसे विभक्ति कहते है । प्रत्येक कारक का विभक्ति चिन्ह होता है, किन्तु हर कारक के साथ विभक्ति चिन्ह का प्रयोग, हो, यह आवश्यक नही है ।

प्रकार:- हिन्दी में कारक आठ प्रकार के होते है ।

यथा -

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. सम्बन्ध 7. अधिकरण 8. सम्बोधन ।

1. कर्ता कारक: (ने)

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जो क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध कराता है अर्थात् क्रिया के करने वाले को कर्ता कारक कहते है । कर्ता कारक का विभक्ति चिन्ह 'ने' विभक्ति का प्रयोग कर्ता कारक के साथ केवल भूतकालिक क्रिया होने पर होता है । अतः वर्तमान काल, भविष्य काल तथा क्रिया के अकर्मक होने पर 'ने' विभक्ति का प्रयोग नहीं होगा ।

जैसे अभिषेक पुस्तक पढ़ता है । गुंजन हँसती है । वर्षा गाना गाती है । आलोक ने पत्र लिखा ।

2. कर्म कारक: (को)

वाक्य में जिस शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते है । कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह है 'को' । कर्मकारक शब्द सजीव हो तो उसके साथ 'को' विभक्ति लगती है, निर्जीव कर्म कारक के साथ नहीं । जैसे - राम ने रावण को मारा । नन्दू दूध पीता है ।

3. करण कारकः (से)

वाक्य में कर्ता जिस साधन या माध्यम से क्रिया करता हैं अर्थात् क्रिया के साधन को करण कारक कहते हैं। करण कारक का विभक्ति चिन्ह 'से' हैं।

जैसे- ज्योत्स्ना चाकू, से सब्जी काटती हैं। मैं पेन से लिखता हूं।

4. सम्प्रदान कारक (के लिए, को, के वास्ते)

सम्प्रदान शब्द का अर्थ है देना। वाक्य में कर्ता जिसे कुछ देता हैं अथवा जिसके लिए क्रिया करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक का विभक्ति चिन्ह 'के लिए' है, किन्तु जब क्रिया द्विकर्मी हो तथा देने के अर्थ में प्रयुक्त हो वहाँ 'को' विभक्ति भी प्रयुक्त होती हैं। जैसे

i. आलोक माँ के लिए दवाई लाया।
ii. मीनाक्षी ने कविता को पुस्तक दी/

अतः द्वितीय वाक्य में 'कविता' सम्प्रदान कारक होगा क्योंकि दी क्रिया द्विकर्मी हैं।

iii. भिखारी को भीख दों। हाँ 'को' शब्द के लिए अर्थ में आया हैं

5. अपादान कारकः (से पृथक् / से अलग)

वाक्य में जब संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु या व्यक्ति का दूसरी वस्तु या व्यक्ति से अलग होने या तुलना करने के भाव का बोध होता है। जिससे अलग हो या जिससे तुलना की जाए, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति भी 'से' हैं किन्तु यहाँ 'से' पृथक् या अलग का बोध कराता है।

i. पेड़ से पत्ता गिरता हैं।
ii. कविता सविता से अच्छा गाती हैं।

6. सम्बन्ध कारक (का, की, के, / रा, री, रे, ना, ने=, नी)

जब वाक्य में किसी संज्ञा या सर्वनाम का अन्य किसी संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध हो, जिससे सम्बन्ध हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह का, के, की, री, रा, रे, ना, ने, नी आदि हैं।

यथा -

i. अजय की पुस्तक गुम गई।
ii. तुम्हारा चश्मा यहाँ रखा है।
iii. अपना कार्य स्वंय करें।

7. अधिकरण कारकः (में, पर, पे) वाक्य में प्रयुक्त, संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह में, पे, पर हैं।

i. पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।
ii. मेज पर पुस्तक रखी हैं।

8. सम्बोधन कारक (हे, ओ, अरे)

वाक्य में, जब किसी संज्ञा या सर्वनाम को पुकारा या बुलाया जाता हैं, अर्थात् जिसे सम्बोधित किया जाए, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। सम्बोधन कारक के विभक्ति चिन्ह हैं- हे, 'ओ ! अरे ! सम्बोधन कारक के बार सम्बोधन चिन्ह ;अर्द्ध या अल्प विराम ; लगाया जाता हैं। जैसे - हे प्रभु ! रक्षा करो। अरे, मोहन यहाँ आओ।

विशेषः सर्वनाम में कारक सात ही होते हैं। इसका 'सम्बोधन कारक' नहीं होता हैं।

• वाच्य

वाक्य में प्रयुक्त क्रिया रूप कर्ता, कर्म या भाव किसके अनुसार प्रयुक्त हुआ हैं, इसका बोध कराने वाले कारकों को वाच्य कहते हैं।

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं।

1. कर्तृवाच्य

2. कर्मवाच्य

3. भाववाच्य

I. <u>कर्त्तृवाच्यः</u> जब वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का सीधा और प्रधान सम्बन्ध कर्ता से होता हैं, अर्थात् क्रिया के लिंग, वचन कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होते हैं, उसे कर्त्तृवाच्य कहते हैं ।

जैसे –

i. लड़का दूध पीता हैं ।
ii. लड़कियाँ दूध पीती हैं ।

प्रथम वाक्य में 'पीता' हैं । क्रिया कर्त्ता 'लड़का' के अनुसार पुल्लिंग एक वचन की हैं जबकि दूसरे वाक्य में 'पीती हैं ।' क्रिया कर्ता 'लड़कियाँ' के अनुसार स्त्रीलिंग, बहुवचन की हैं ।

<u>विशेष-</u> आदरार्थ 'आप' के लिए क्रिया सदैव बहुवचन में होती हैं जैसे आप जा रहे हैं ।

2. <u>कर्मवाच्यः-</u> जब वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का सीधा सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त कर्म से होता हैं अर्थात् क्रिया के लिंग, वचन कर्त्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते हैं, उसे कर्मवाच्य कहते हैं । कर्मवाच्य सदैव सकर्मक क्रियाओं का ही होता हैं क्योकि इसमें 'कर्म' की प्रधानता रहती हैं ।

जैसे-

i. राम ने चाय पी ।
ii. सीता ने दूध पिया ।

उपर्युक्त प्रथम वाक्य में क्रिया 'पी' स्त्रीलिंग एक वचन हैं जो वाक्य में प्रयुक्त कर्म 'चाय' (स्त्रीलिंग, एकवचन) के अनुसार आयी हैं । द्वितीय वाक्य में प्रयुक्त क्रिया 'पिया पुल्लिंग, एकवचन में हैं जो वाक्य में प्रयुक्त कर्म 'दूध' (पुल्लिंग, एकवचन) के अनुसार हैं ।

कर्मवाच्य की दो स्थितियाँ होती हैं

i. कर्त्तायुक्त कर्मवाच्य
ii. कर्त्ता रहित कर्मवाच्य

i. कर्त्तायुक्त कर्मवाच्यः जब वाक्य में कर्त्ता विधमान हो तो वह तिर्यक कारक की स्थिति में होगा अर्थात् कर्त्ता कारक चिन्ह (विभक्ति) युक्त होगा तथा ऐसी स्थिति में क्रिया बीते समय की (भूतकालिक) होगी ।

जैसे-

(i) नरेन्द्र ने मिठाई खाई ।
(ii) रोजी ने दूध पिया ।

ii. कर्त्ता रहित कर्मवाच्य- कर्ता रहित कर्मवाच्य की स्थिति में वाक्य में प्रयुक्त कर्म ही प्रत्यक्ष कर्ता के रूप में प्रयुक्त होता हैं । ऐसी स्थिति में क्रिया संयुक्त होती हैं ।

जैसे –

एक ओर अध्ययन हो रहा था, दूसरी ओर मैच चल रहा था । जबकि क्रिया की पूर्णता की स्थिति में क्रिया पद के गठन में आ । ई । ए मुख्यधातु में न जुड़कर उसके तुरन्त बाद में प्रयुक्त सहायक धातु में जुड़ते हैं । जैसे अन्थेनी की घड़ी चुराली गई चोर पकड़ लिए गए ।

3. भाववाच्यः जब वाक्य में प्रयुक्त क्रिया न तो कर्त्ता के अनुसार होती है, न कर्म के अनुसार, बल्कि असमर्थता के भाव के साथ होती है। वहाँ भाववाच्य होता हैं ।

जैसे आँखों में दर्द के कारण मुझसे पढ़ा नहीं जाता । इस स्थिति में अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग भाव वाच्य में होता है ।

भाववाच्य की एक अन्य स्थिति यह भी हैं कि यदि क्रिया सकर्मक हो तथा कर्ता और कर्म दोनों तिर्यक (विभक्तिचिन्ह युक्त) हों तो क्रिया सदैव पुल्लिंग, अन्यपुरुष, एकवचन, भूतकाल की होगी ।

जैसे - राम ने रावण को मारा । लड़की ने लड़के को पीटा ।

<u>वाच्य परिवर्तनः-</u>

i. कर्त्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनानाः कर्त्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती हैं, जबकि कर्मवाच्य में कर्म की । अतः किसी किसी वाक्य को कर्त्तृवाच्य से

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अर्थ के आधार पर

- **एकार्थी शब्द**

एकार्थक शब्द किसे कहते हैं

ऐसे **शब्द** जिनका साधारणतः एक ही अर्थ होता है, कोई दूसरा अर्थ प्रकट नहीं होता ऐसे शब्दों को एकार्थी शब्द कहते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ इस प्रकार के शब्दों के अच्छे उदाहरण हैं।

उदाहरण :-

मनुष्यों के नाम	कमला, राधा, राम, मोहन आदि।
देशों के नाम	भारत, चीन, अमेरिका आदि।
नगरों के नाम	मुंबई, लंदन, दिल्ली, पेरिस आदि।
गाँवों व कस्बों के नाम	मेहरा पिपरिया, बालाघाट आदि।
पहाड़ों के नाम	विंध्याचल, हिमालय, राकीज आदि।
नदियों के नाम	गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, नील आदि।
महीनों के नाम	चैत्र, वैशाख, जनवरी, रमजान आदि।
दिनों के नाम	सोमवार, संडे, मंगलवार आदि।
उपाधियों के नाम	निराला, रत्नाकर, प्रभात आदि।
कलाएँ	संगीत, वास्तुकला, साहित्य, काव्य आदि।
विद्याएँ व विषय	इतिहास, गणित, भूगोल आदि।
भाषाएँ	अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, अरबी आदि।
बीमारियाँ	पक्षाघात, हैजा, मलेरिया फ्लू आदि।
परिभाषिक शब्द	हाइड्रोजन, धमनी, तापमान, दुग्धमापी, निःश्वासन, चिकित्सा, चलचित्र, भौतिकी, प्रतिवादी, पैमाना, अभियोग, न्यायधीश, अपराध आदि

इन शब्दों के अतिरिक्त ऐसे अनेक सैंकड़ों **शब्द** हैं जिनका केवल एक ही अर्थ हैं।

जैसे :- बोतल, रेडियो, पेंसिल, किताब, कुर्सी, दरवाजा, दीवार, मिट्टी, पंखा, ईट, लाल, पीला, तकिया, पलंग, फोन, बिजली आदि।

एकार्थक शब्द परिस्थिति विशेष के लिए ही प्रयुक्त होते हैं।

(नायिका का आशय कहानी या नाटक का पात्र, अभिनेत्री का अशय किसी किरदार का अभिनय करना।)

(xxiii). तट :- तट पर बैठे-बैठे लहरे देखना पसंद है। (नदी या तालाब के किनारे की जमीन)

(xxiv). तीर :- यमुना के तीर पर बहुत सी गोपीकाएँ खड़ी थी। (नदी के जल से स्पर्श जमीन)

(xxv). स्नेह :- माँ अपने बेटे से ज्यादा स्नेह रखती है। (छोटों के प्रति प्रेम)

(xxvi). प्रणय :- राधा का कृष्ण जी से प्रणय हुआ था। (दाम्पत्य प्रेम)

(xxvii). पुरुस्कार :- उससे समाज सेवा का पुरुस्कार मिलना चाहिए। (कोई बड़े कार्य पर)

(xxviii). पारितोषिक :- कुर्सी दौड़ में प्रथम आने पर काव्य प्रवाह को पारितोषिक दिया गया। (छोटे स्तर पर)

(xxix). पत्नी :- कमला तो रामलाल की पत्नी है। (व्यक्तिविशेष की स्त्री)

(xxx). स्त्री :- स्त्री का स्वभाव कोमल होता है। (कोईभी स्त्री)

(xxxi). महिला :- महादेवी वर्मा एक विदुषी महिला है। (कोई विशिष्ट स्त्री)

(xxxii). नारी :- सभी नारी एक जैसी नहीं होती। (समूहवाचक रूप में)

(xxxiii). यंत्रणा या यातना :- जेल की यंत्रणा बहुत भयानक होती है।

(xxxiv). सेवा :- माता पिता की सेवा परम दायित्व है।

(xxxv). सुश्रुषा :- रोगियों की अच्छी सुश्रुषा हो रही है।

(xxxvi). समीर :- रात्रि को जल समीर चलते हैं। (विशाल वायु राशि)

(xxxvii). पवन :- ठंडी पवन के झोंके सुहाने लगते हैं। (क्षेत्र विशेष में चलने वाली वायु)

• अनेकार्थक शब्द

अनेकार्थक शब्दों से अभिप्राय है, ऐसे शब्द जिनके अनेक अर्थ हों। हिंदी भाषा में भी कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग कई अर्थों में होता है। उनके अर्थों का ज्ञान वाक्य में प्रयोग से ही हो सकता है।

कुछ ऐसे ही शब्दों का संग्रह नीचे दिए जा रहे हैं –

1. **अनंत** – आकाश, जिसका अंत न हो, ईश्वर, शेषनाग।
2. **आली** – सखी, पंक्ति।
3. **अलि** – सखी, कोयल, भँवरा।
4. **अवधि** – समय, सीमा।
5. **आदि** – आरंभ, इत्यादि।
6. **उपचार** – इलाज, उपाय।
7. **अंतर** – हृदय, भेद, फर्क, व्यवधान, अवधि, अवसर।
8. **अंक** – नाटक का सर्ग, परिच्छेदन, नंबर, चिह्न, गोद।
9. **अमर** – ईश्वर, देवता, शाश्वत, आकाश और धरती के मध्य में।
10. **अधर** – होंठ, नीचे, पराजित।
11. **अंबर** – आकाश, कपड़ा
12. **अदृष्ट** – जो देखा न जाए, भाग्य, गुप्त, रहस्य।
13. **अक्षर** – अविनाशी, वर्ण, ईश्वर, आत्मा, आकाश, धर्म, तप।

14. **अब्धि** – सागर, समुद्र।

15. **अज** – ब्रह्म, शिव, बकरा, दशरथ के पिता।

16. **अब्ज** – चंद्रमा, कमल, शंख, कपूर।

17. **अक्ष** – रथ की धुरी, जुआ खेलना, पासा, रेखा, जो दोनों ध्रुवों को मिलाए।

18. **अर्थ** – ऐश्वर्य, धन, हेतु, मतलब, प्रयोजन।

19. **अर्क** – सूर्य, रस, आक का पौधा।

20. **अरुण** – हल्का लाल रंग, सूर्य का सारथी, प्रभात का सूर्य।

21. **अवकाश** – छुट्टी, बीच के आराम का समय, मौका।

22. **अपवाद** – निंदा, किसी नियम का विरोधी।

23. **अभिजात** – पूज्य, उच्च कुल का, सुंदर।

24. **उत्तर** – उत्तर दिशा, जवाब, पीछे।

25. **आम** – (फलों का राजा) फल, साधारण, विख्यात।

26. **और** – तथा, दूसरा, अधिक, योजक शब्द।

27. **कनक** – धतूरा, सोना, गेहूँ।

28. **कर** – हाथ, किरण, हाथी की सूँड़, टैक्स, करना, क्रिया।

29. **कर्ण** – कान, पतवार, कुंती पुत्र कर्ण, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा।

30. **कल** – बीता दिन, आने वाला दिन, सुख, मशीन।

31. **काल** – अवसर, समय, मृत्यु, यम, शनि, शिव।

32. **काम** – कार्य, धंधा, कामदेव, इच्छा, शुक्र।

33. **कुल** – वंश, सारा, सभी।

34. **कोश** – कोष, खज़ाना, डिक्शनरी, म्यान, फूल का भीतरी भाग।

35. **गुण** – विशेषता, रस्सी स्वभाव।

36. **गुरु** – शिक्षक, श्रेष्ठ, बड़ा, भारी, दो मात्राएँ (छंद में)।

37. **ग्रहण** – लेना, सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण, स्वीकार करना।

38. **गिरा** – बोलने की शक्ति, जीभ, सरस्वती, वाणी।

39. **गौ** – गाय, इंद्रिय, वाणी, पृथ्वी।

40. **घट** – घड़ा, हृदय, कम, देह, पिंड़।

41. **घन** – बादल, घना, भारी।

42. **चक्र** – अस्त्र, पहिया, गोल वस्तु, चक्कर, भँवर।

43. **चीर** – रेखा, वस्त्र, चीरना, पट्टी।

44. **चपला** – स्त्री, बिजली, लक्ष्मी, नटखट, चंचल।

45. **जवान** – युवा, सैनिक, योद्धा।

46. **जीवन** – जिंदगी, प्राण, जल, वृत्ति।

47. **जड़** – मूल, मूर्ख, सरदी से ठिठुरा, अचेतन।

48. **तीर** – बाण, तीर का निशान, तट।

49. **तात** – पिता, भाई, पूज्य, मित्र।

50. **तनु** – शरीर, पतला, कम, कोमल।

51. **तम** – अँधेरा, कालिख, अज्ञान, क्रोध, राहु, पाप।

52. **तप** – तपस्या, साधना, अग्नि।

53. **तार** – धातु का तार, तारघर से संदेश भेजना, तारना।

54. **तारा** – आँख की पुतली, सितारा, महाराजा हरिश्चंद्र की पत्नी।

55. **दल** – पत्ता, समूह, सेना, पक्ष।

56. **दक्षिण** – दक्षिण दिशा, दाहिना, अनुकूल।

57. **दक्ष** – कुशल, अग्नि, नदी, प्रजापति।

58. **द्विज** – ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चंद्रमा।

59. **धन** – पूँजी, द्रव्य।

60. **धारणा** – बुद्धि, विचार, विश्वास।

61. **नाग** – सर्प, हाथी, नागकेसर।

• वाक्यांशों के लिए एक शब्द

अच्छी रचना के लिए आवश्यक है कि कम से कम शब्दों में विचार प्रकट किए जाए। और भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर विचार अभिव्यक्त कर सके। कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वाक्यांश या शब्द-समूह के लिए एक शब्द' का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य-रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता तथा गंभीरता आ जाती है। भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते हैं ।

कुछ वाक्यांशों के लिए एक शब्द –

'अ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो सबके आगे रहता हो - अग्रणी
- किसी आदरणीय का स्वागत करने के लिए चलकर कुछ आगे पहुँचना - अगवानी
- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके - अगाध
- जो गाये जाने योग्य न हो - अगेय
- जो छेदा न जा सके - अछेद्य
- जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो - अजातशत्रु
- जिसे जीता न जा सके – अजेय
- जिसके खंड या टुकड़े न किये गये हों - अखंडित
- जो खाने योग्य न हो - अखाद्य
- जो गिना ना जा सके - अगणित/अनगिनत
- जिसके अंदर या पास न पहुँचा जा सके - अगम्य
- जिसके पास कुछ भी न हो - अकिंचन
- जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो - अक्षम
- जिसका खंडन न किया जा सके - अखंडनीय
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो - अगोचर
- दूर तक फैलने वाला अत्यधिक नाशक आग - अग्निकांड
- जिसका जन्म पहले हुआ हो - अग्रज
- जो किसी देन या पारिश्रमिक मदे पहले से ही सोचे - अग्रिम
- जो अंडे से जन्म लेता है - अंडज
- किसी कथा के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा - अंतर्कथा
- राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास स्थान - अंतपुर
- मन में आप से उत्पन्न होने वाली प्रेरणा - अंतप्रेरणा
- अंक में सोने वाला - अंकशायी
- अंक में स्थान पाया हुआ – अंकस्थ

'आ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- अग्नि से संबधित या आग का - आग्नेय
- पूरे जीवन में - आजीवन
- जिस पर किसी का आतंक छाया हो – आतंकित
- जो बहुत क्रूर स्वभाव वाला हो - आततायी
- जो मृत्यु के समीप हो - आसन्नमृत्यु/मरणासन्न
- बालक से लेकर वृद्ध तक - आबालवृद्ध
- जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हो - आजानुबाहु
- जो जन्म लेते ही मर जाए - आदण्डपात
- जिसे विश्वास या दिलासा दिलाया गया हो - आश्वस्त
- आशा से बहुत अधिक - आशातीत
- वह कवि जो तत्काल कविता कर डालता है - आशुकवि
- जो अपनी हत्या कर लेता है - आत्मघाती
- अपने आप को किसी के हाथ सौंपना या समर्पित करना - आत्मसमर्पण

- दूसरों के (सुख के) लिए अपने सुखों का त्याग – आत्मोत्सर्ग

'इ' व 'ई' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया वृत - इतिवृत्त
- किसी देश या समाज के सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं, तथ्यों आदि का क्रमबद्ध विवरण- इतिहास
- इतिहास का जानकार - इतिहासज्ञ
- जो दूसरों की उन्नति देखकर जलता हो - ईर्ष्यालु
- उत्तर-पूर्व के बीच की दिशा - ईशान
- इस लोक से संबंधित - इहलौकिक/ऐहिक
- प्रायः वर्षा ऋतु में आकाश में दिखायी देने वाले सात रंगों वाले धनुष - इंद्रधनुष
- इंद्रियों को वश में रखने वाला – इंद्रियजित, जितेन्द्रिय
- इमारत के लिए या इमारत से संबंधित - इमारती
- अपनी इच्छा के अनुसार सब काम करने वाला - इच्छाचारी
- किसी चीज या बात की इच्छा रखने वाला – इच्छुक

'उ' व 'ऊ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जिसका मन उदार हो - उदारमना
- जिसका हृदय उदार हो - उदारहृदय
- ऊपर आने वाला श्वास - उच्छ्वास
- ऊपर की ओर उछाला या फेंका हुआ - उत्क्षिप्त
- जिसका उल्लेख करना आवश्यक हो - उल्लेखनीय
- जिससे उपमा दी जाए - उपमान
- वह वस्तु जिसका उत्पादन हुआ हो - उत्पाद
- सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है - उदयाचल
- बीज से जन्म लेने वाला - उद्भिज
- उत्तर दिशा - उदीची
- वह हँसी जिसमें अपमान का भाव हो - उपहास
- जिस पर उपकार किया गया हो - उपकृत
- पर्वत के नीचे की समतल भूमि – उपत्यका

'ए' व 'ऐ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- इंद्रियों से संबंधित - ऐंद्रिक
- किसी एक पक्ष से संबंध रखने वाला - एकपक्षीय
- चांद्रमास के किसी पक्ष की ग्यारहवीं तिथि - एकादशी
- किसी वस्तु के क्रय-विक्रय का अकेला अधिकार - एकाधिकार
- इन्द्रजाल करने वाला - ऐन्द्रजालिक
- जिसका संबंध किसी एक देश से हो - एकदेशीय
- जो अपनी इच्छा पर निर्भर हो - ऐच्छिक
- इन्द्र का हाथी - ऐरावत
- जिसका चित्त एकाग्रित हो - एकाग्रचित
- इतिहास से संबंधित - ऐतिहासिक
- इस लोक से संबंध रखने वाला - ऐहलौकिक
- जो दिन में एक बार भोजन करता हो – एकाहारी

'ओ' व 'औ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो उपनिषदों से संबंधित हो - औपनिषदिक
- साँप बिच्छू के जहर या भूतप्रेत के भय को मंत्रो से झाड़ने वाला - ओझा
- जिसका उच्चारण ओष्ठ से हो – ओष्ठ्य
- परब्रह्म का सूचक ओं शब्द - ओंकार
- आड़ या परदे के लिए रथ या पालकी को ढकने वाला कपड़ा - ओहार
- जिसका संबंध उपनिवेश या उपनिवेशों से है - औपनिवेशिक

अध्याय – 6

समास

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।
।

जैसे:-

गंगाजल	गंगाजल	- गंगा का जल
गंगा	जल	गंगा जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष)

(से, के द्वारा) *से (अलग होने के अर्थ से)* *(मे, पर)*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(I) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत, हर आदि शब्द आते हैं।

समस्त पद	-	विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो/जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप मे/जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में/ (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन

[III] संप्रदान तत्पुरुष समास (चतुर्थ तत्पुरुष):-

जहाँ समास के पूर्व पक्ष में संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है, वहाँ संप्रदान तत्पुरुष समास है। जैसे

समस्त पद	-	**विग्रह**
प्रयोगशाला	-	प्रयोग के लिए शाला
स्नानघर	-	स्नान के लिए घर
यज्ञशाला	-	यज्ञ के लिए शाला
गौशाला	-	गौ के लिए शाला
देशभक्ति	-	देश के लिए भक्ति
डाकगाड़ी	-	डाक के लिए गाड़ी
परीक्षा भवन	-	परीक्षा के लिए भवन
हथकड़ी	-	हाथ के लिए कड़ी
कृष्णार्पण	-	कृष्ण के लिए अर्पण
हवन सामग्री	-	हवन के लिए सामग्री
सभा भवन	-	सभा के लिए भवन
युद्धभूमि	-	युद्ध के लिए भूमि
गुरुदक्षिणा	-	गुरु के लिए दक्षिणा
रणनिमंत्रण	-	रण के लिए निमंत्रण
सत्याग्रह	-	सत्य के लिए आग्रह
क्रीडाक्षेत्र	-	क्रीड़ा के लिए क्षेत्र
रसोईघर	-	रसोई के लिए घर
राहखर्च	-	राह (रास्ते) के लिए खर्च
देशार्पण	-	देश के लिए अर्पण
मालगोदाम	-	माल के लिए गोदाम
पितृदान	-	पितृ के लिए दान
युद्धाभ्यास	-	युद्ध के लिए अभ्यास
परीक्षाकेंद्र	-	परीक्षा के लिए केन्द्र
आरामकुर्सी	-	आराम के लिए कुर्सी
देवबलि	-	देव के लिए बलि
राज्यलिप्सा	-	राज्य के लिए लिप्सा
पाठशाला	-	पाठ के लिए शाला
वासस्थान	-	वास के लिए स्थान
मवेशीखाना	-	मवेशियों के लिए जगह
टूथपेस्ट	-	टूथ (दाँत) के लिए पेस्ट
रासलीला	-	रास के लिए लीला
छात्रावास	-	छात्रों के लिए आवास
आनन्दभवन	-	आनन्द के लिए भवन
जेबखर्च	-	जेब के लिए खर्च
विद्यापीठ	-	विद्या के लिए पीठ
शान्तिनिकेतन	-	शान्ति के लिए निकेतन
प्रचारगाड़ी	-	प्रचार के लिए गाड़ी
अतिथिशाला	-	अतिथि के लिए शाला
मृत्युदंड़	-	मृत्यु के लिए दिया जाने वाला दंड़
विश्रामस्थल	-	विश्राम के लिए स्थल
बलि - पशु	-	बलि के लिए पशु

[IV] अपादान तत्पुरुष समास (पंचमी तत्पुरुष):-

जिस तत्पुरुष समास में अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने के भाव में) लुप्त हो जाती है, वहाँ अपादान तत्पुरुष समास होता है जैसे –

नोट:-

हीन, मुक्त शब्द अलग होने के अर्थ में प्रयोग होते हैं।

समस्त पद	-	**विग्रह**
धनहीन	-	धन से हीन
गुणहीन	-	गुण से हीन
जलहीन	-	जल से हीन
आवरणहीन	-	आवरण से हीन
कर्महीन	-	कर्म से हीन
नेत्रहीन	-	नेत्र से हीन
वाक्यहीन	-	वाक्य से हीन

भाषाहीन - भाषा से हीन

संगीहीन - संगी से हीन

पथभ्रष्ट - पथ से भ्रष्ट

(भ्रष्ट - बिगड़ा हुआ, नीचे गिरा हुआ)

पदच्युत - पद से च्युत

देशनिकाला - देश से निकाला

ऋणमुक्त - ऋण से मुक्त

पापमुक्त - पाप से मुक्त का

जीवनमुक्त - जीवन से मुक्त

पदमुक्त - पद से मुक्त

अभियोगमुक्त - अभियोग से मुक्त

कर्तव्य – विमुख - कर्तव्य से विमुख
(विमुख- वंचित)

आशातीत - आशा से अतीत

धर्मभ्रष्ट - धर्म से भ्रष्ट

(भ्रष्ट - बिगड़ा हुआ, आचरणहीन, नीचे गिरा हुआ)

धर्म विमुख - धर्म से विमुख
(विमुख - वंचित)

बन्धन मुक्त - बन्धन से मुक्त

पापोद्धार - पाप से उद्धार

अपराधमुक्त - अपराध से मुक्त

रोगमुक्त - रोग से मुक्त

जातिभ्रष्ट - जाति से भ्रष्ट

(भ्रष्ट– बिगड़ा, आचरणहीन)

आकाशवाणी - आकाश से वाणी

जलरिक्त - जल से रिक्त

गर्वशून्य - गर्व से शून्य

धर्मविरत - धर्म से विरत
(विरत - जिसने हाथ खींच लिया हो)

त्रुटिहीन - त्रुटि से हीन

वीरविहीन - वीर से हीन

[v] संबंध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष) :- जिस तत्पुरुष समास मे संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'की', 'के' लुप्त हो जाती हैं, वहाँ संबंध तत्पुरुष समास होता हैं।

जैसे :-

समस्त पद	-	**विग्रह**
राजपुत्र	-	राजा का पुत्र
राजाज्ञ	-	राजा की आज्ञा
पराधीन	-	पर के अधीन
राजकुमार	-	राजा का कुमार
देवरक्षा	-	देव की रक्षा
शिवालय	-	शिव का आलय (आलय = घर)
गृहस्वामी	-	गृह का स्वामी
विद्यासागर	-	विद्या का सागर
लोकतंत्र	-	लोगों का तंत्र
ईश्वर-भक्त	-	ईश्वर का भक्त
राजदूत	-	राजा का दूत
राजसभा	-	राजा की सभा
लखपति	-	लाखों (रुपयों) का पति
जलधारा	-	जल की धारा
क्षमादान	-	क्षमा का दान
मताधिकार	-	मत का अधिकार
भारत रत्न	-	भारत का रत्न
मृत्युदंड़	-	मृत्यु का दंड़
स्वतन्त्र	-	स्व का तन्त्र
देव मूर्ति	-	देव की मूर्ति
गंगा – तट	-	गंगा का तट
अमृतधारा	-	अमृत की धारा
गणपति	-	गण का पति (गणेश)

महादेवी	-	महान है जो देवी
गुरुदेव	-	देव के समान गुरु
महाशय	-	महान है जो (शय) व्यक्ति
सर्वव्यापक	-	सब जगह व्याप्त है जो
स्नेह रस	-	स्नेह से भरा रस
स्नेह दाता	-	स्नेह देता है जो
भलेमानस	-	भला है जो मानस
स्वयं सेवक	-	स्वयं सेवा करता है जो
मोमबत्ती	-	मोम से बनी है बत्ती
गोलघर	-	गोल है जो घर
स्वगतोक्ति	-	स्वगत है जो उक्ति
कीचड़ पानी	-	कीचड़ से युक्त पानी
कम उम्र	-	कम है जो उम्र
आजाद ख्याल	-	स्वतन्त्र है जो ख्याल

(4) <u>द्विगु समास (Numeral compound):-</u>

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद संख्यावाची शब्द होता है, वहीं द्विगु समास होता है।

- अर्थ की दृष्टि से द्विगु समास से किसी समूह या समाहार का बोध होता है अर्थात् यह समास समूहवाची या समाहारवाची होता है।

समस्त पद	-	**विग्रह**
सप्तसिन्धु	-	सात सिन्धुओं का समूह
दोपहर	-	दो पहरों का समूह
त्रिलोक	-	तीनों लोकों का समाहार / तीन लोक
चौराहा	-	चार राहों का समूह/ चार राहों का समाहार
नवरात्र	-	नौ रात्रियों का समूह
सप्तऋषि / सप्तर्षि	-	सात ऋषियों का समूह
पंचमढी	-	पाँच मढ़ियों का समूह
सप्ताह	-	सात दिनों का समूह
त्रिकोण	-	तीन कोणों का समाहार
तिरंगा	-	तीन रंगों का समूह
अठन्नी	-	आठ आनों का समाहार
चवन्नी	-	चार आने का समाहार
चौपाया	-	चार पांव वाला
चौमासा	-	चौ (चार) मासों का समूह
नवरत्न	-	(नव + रत्न) नौ रत्नों का समूह
षट्कोण	-	छः कोणों का समूह
सतरंगी	-	सात रंगो का समूह
चारपाई	-	चार पायों का समूह
तिमंजिल	-	तीन मंजिलों का समूह
तितल्ले	-	तीनों तल्लों का समूह
पंचतंत्र	-	पाँच तन्त्रों का समूह
त्रिवेणी	-	तीनों वेणियों का समूह
चतुष्पद	-	चार पादों का समूह
नवग्रह	-	नौ ग्रहों का समूह
चतुर्दिक	-	चार दिशाओ का समूह
त्रिफला	-	तीन फलों का समूह
त्रिभुवन	-	तीन भवनों का समूह

<u>नोट</u>- प्रायः द्विगु समास के समस्त पद एकवचन की तरह प्रयोग में लाये जाते हैं। जैसेः-

1. षट् रस का आनन्द लेना (शुद्ध) - षट् रसों का आनन्द लेना (अशुद्ध)
2. मैंने पंचतन्त्र (ग्रन्थ) पढा (शुद्ध) - मैंने पंचतन्त्र पढे। (अशुद्ध)
3. शताब्दी (न कि सौ वर्ष)
4. त्रिकोण (तीन कोण वाला एक आकार, न कि तीन कोण)
5. शतदल (सौ या अधिक दलों वाला कमल पुष्प, न कि सौ दल)

आदि शब्द एकवचन संज्ञा के रूप में प्रयोग में आते हैं।

कर्मधारय समास और द्विगु समास में अन्तर:-

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है, जो दूसरे पद की गिनती बताता है, जबकि, कर्मधारय समास का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नही होता है। जैसे:- नवरत्न - नौ रत्नों का समूह (द्विगु समास)

चतुर्वर्ण- चार वर्णों का समूह (द्विगु समास)

पुरुषोत्तम- पुरुषों में जो है उत्तम (कर्मधारय समास)

रक्तोत्पल - रक्त (लाल) है जो उत्पल (कमल) (कर्मधारय समास)

(5) द्वन्द्व (द्वन्द) समास (Copulative Compound):-

जिस समास में दोनों पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर 'और',अथवा , 'या', 'एवं' लगता हो, वहाँ द्वन्द्व समास होते हैं ।

पहचान- दोनों पदों के बीच प्राय: योजक चिन्ह (Hyphen) (-) का प्रयोग होता है। इस समास में एक जैसे दो शब्द आएँगे जैसे:- संज्ञा - संज्ञा, क्रिया -क्रिया, विशेषण - विशेषण आदि।

समस्त पद	-	**विग्रह**
नदी - नाले	-	नदी और नाले
पाप- पुण्य	-	पाप और पुण्य
सुख - दुःख	-	सुख और दुःख
गुण-दोष	-	गुण और दोष
देश - विदेश	-	देश और विदेश
आगे - पीछे	-	आगे और पीछे
राजा - प्रजा	-	राजा और प्रजा
नर - नारी	-	नर और नारी
राधा - कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
छल - कपट	-	छल और कपट
अपना - पराया	-	अपना और पराया
गंगा- यमुना	-	गंगा और यमुना
कपड़ा -लत्ता	-	कपड़ा और लत्ता
वेद- पुराण	-	वेद और पुराण
गाड़ी - घोड़ा	-	गाड़ी और घोड़ा
खरा - खोटा	-	खरा और खोटा
गौरी - शंकर	-	गौरी और शंकर
अन्न-जल	-	अन्न और जल
ऊंच - नीच	-	ऊंच और नीच
माता - पिता	-	माता और पिता
यश - अपयश	-	यश और अपयश
ठण्डा - गरम	-	ठंडा और गरम
हिन्दु - मुसलमान	-	हिन्दु और मुसलमान
भला - बुरा	-	भला या बुरा
तेरी - मेरी	-	तेरी और मेरी
दो - चार	-	दो या चार
इधर - उधर	-	इधर और उधर
ऊपर - नीचे	-	ऊपर या नीचे
उठता - गिरता	-	उठता और गिरता
घर - द्वार	-	घर और द्वार
बन - ठन	-	बन और ठन
देश - विदेश	-	देश और विदेश
नाचना-गाना	-	नाचना और गाना
देवासुर	-	देव और असुर
दरवाजे - खिड़कियाँ	-	दरवाजे और खिड़कियाँ
धर्माधर्म	-	धर्म और अधर्म
ऋषियों - मुनियों	-	ऋषियों और मुनियों
राधा-कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
लड़ाई - झगड़ा	-	लड़ई और झगड़ा
भाई - बहन	-	भाई और बहन
हीरा - मोती	-	हीरा और मोती
रात - दिन	-	रात और दिन

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

जैसे –

' पानी गए न उबरे मोती मानस चून'। यहाँ पानी के अनेक अर्थ हैं और इसका पर्यायवाची रखने पर व्यंजना समाप्त हो जाएगी।

(ख.) आर्थी व्यंजना – शाब्दी व्यंजना के विपरीत इसमें जब शब्द बदल देने पर भी व्यंगार्थ निकलता रहे, तब आर्थी व्यंजना होगी। व्यंजना अर्थ में हो, किसी शब्द विशेष पर आधारित न हो। वहाँ आर्थी व्यंजना होती है।

जैसे –

एक मन मोहन तो बस के उजारियो मोहि,
हिय में अनेक मन मन मोहन बसावो ना।

अध्याय – 14
अपठित गद्यांश

गद्यांश – I

निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए :

हमलोग जब हिन्दी की 'सेवा' करने की बात सोचते हैं, तो प्रायः भूल जाते हैं कि यह लाक्षणिक प्रयोग है। हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है। मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है । साहित्य सृष्टि का भी यही अर्थ है । जो साहित्य अपने आप के लिए लिखा जाता है उसको क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग-शोक, दारिद्र्य, अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय-निधि है।

- 'परमुखापेक्षिता' का अर्थ है

(1)दूसरों से आशा रखना
(2)पयारा मुख अच्छा लगना
(3)पराये मुख की अपेक्षा करना
(4) ईश्वर का मुख

उत्तर : - (1)

- कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है ?

(1)सेवा (2) भाषा
(3)प्रयोग (4)हिंदी

उत्तर : - (3)

- इस गद्यांश में प्रयुक्त 'अर्थ' शब्द का अर्थ नहीं है

(1) आशय (2) मतलब
(3) धन (4) अभिप्राय

उत्तर : - (3)

- कौनसा शब्द एकवचन हैं ?

(1) विचारों (2) भाषाओं

(3) अक्षय (4) मनुष्यों
उत्तरः - (3)

- 'कीमत' की बहुवचन है।
(1) कीमती (2) कीमतों
(3) किमतों (4) किम्मत
उत्तर : - (4)

- 'माध्यम' का बहुवचन है ।
(1)मध्यमा (2) माध्यमिक
(3) मध्यम (4) माध्यमों
उत्तर : - (4)

- 'अक्षय – निधि' का अर्थ है।
(1) बिना क्षय रोग
(2) किसी का नाम
(3) कभी खत्म न होने वाली सम्पत्ति
(4) रोग रहित नहीं
उत्तरः - (3)

गद्यांश – 2

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिएः

भारत अब प्रौढ़ावस्था में आ पहुंचा है। भीषण घात-प्रतिघात से साक्षात्कार करते हुए भी उसने बहुमुखी विकास किया है, इसमें संदेह नहीं । लेकिन उसका एक प्रकोष्ठ अंधकार में अभी भी डूबा हुआ है- हृदय, जो कि मानवीय क्रिया व्यापार का नियन्ता है। इस समय वह स्वार्थपरता और भोगवाद के ऐसे रोग से ग्रसित हो गया है जिसके कारण मानवीय आचरण भी बनैला हो गया है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद - प्रभृति विभिषिकाएँ जो आजादी के साथ उपहार में मिली थीं, आए दिन कहीं-न-कहीं अपनी लोमहर्षक लोला सम्पन्न करती रहती हैं। परिणामस्वरूप शिथिल पड़ते अनुशासन के बन्धन, विखण्डित होती श्रद्धा और कलंकित होता विश्वास; मानवता के लिए काँटो की सेज बन प्रस्तुत हो रहे हैं। फिर भी 21वीं सदी में प्रवेश की अधीरता हमें सर्वाधिक रही है। कतिपय लोल कपोलों की कृत्रिम रंगीनियाँ समूचे देशवासियों का पर्याय मान लेना उचित नहीं । अतः कल्पना के भव्य महलो के ध्वंसावशेषों पर यथार्थ की झोपड़ियों का निर्माण ही उचित होगा ।

- वह शब्द बताइए जिसमें संधि तथा प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है

(A) रंगोनियों (B) ध्वंसावशेषों
(C)अधीरता (D)संप्रदायवाद
उत्तरः - (B)

- इनमें से वह शब्द बताइए जिसमें समास तथा उपसर्ग का प्रयोग हुआ है।

(A) घात-प्रतिघात (B) भारतवासियों
(C) कर्मयोगी (D) आत्मनिर्भरता
उत्तरः - (A)

- वह तत्सम शब्द बताइए जिसके साथ उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग है।
A. मानवीय B. मानवता
C.अधीर D.विखंडित
उत्तरः- D

- कर्म तत्पुरुष समास का उदाहरण इनमें कौनसा है ?
A. लोमहर्षक
B. आत्मनिर्भरता
C. देशवाशियों
D. सर्वाधिक
A

- इनमें से कौन सा शब्द तत्सम है ?
(A) स्वतंत्रता (B) श्रद्धा
(C) झोपड़ियों (D) आजादी
उत्तरः- (A)

(1) हस्तगत (2) हस्तक्षेप

(3) अहस्तक्षेप (4) दखल देना

उत्तर : - (2)

व्याख्या - हस्तगत जिसको अपने हाथ में ले लिया है।

गद्यांश – 6

निम्न गद्यांश का अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चुनिए –

भारतीय नारी न्याय, बलिदान, साहस, शक्ति तथा सेवा की सजीव मूर्ति है। जीवन के सुख-दुःख में छाया की भाँति पुरुष का साथ देने के कारण वह अर्द्धांगिनी, घर की व्यवस्थापिका होने के कारण वह लक्ष्मी, श्लाघनीय गुणों के कारण देवी कही जाती है। स्वार्थ और भोग लिप्सा को तिलांजलि देकर भारतीय नारी ने आत्म-बलिदान द्वारा समय-समय पर ऐसी ज्योति प्रज्वलित की है कि उसके पुनीत प्रकाश में पुरुष ने अपना मार्ग ढूँढ़ा है। उसकी शक्ति के सामने यमराज को भी हारना पड़ा है। सती सावित्री, वीरांगना लक्ष्मीबाई, तपस्विनी उर्मिला की दिव्य झाँकियाँ प्रेरणा की स्रोत हैं और पुरुष चेतना और जागरण का संदेश देते हैं। नारी सम्मान करके ही पुरुष का जीवन कुसुम सुवासित होता है। नारी जहाँ दुःख पाती है वहाँ कभी सुख-शांति नहीं हो सकती। भारतीय संस्कृति सदियों से नारी के महत्व को स्वीकार रही है। उसका सम्मान हमारी संस्कृति का अटूट हिस्सा है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं।

- 'भारतीय संस्कृति सदियों से नारी के महत्व को स्वीकार रही है।' यह वाक्य किस काल का है ?

(1) वर्तमान काल (2) भूतकाल
(3) भविष्यकाल (4)आज्ञार्थक वर्तमान
उत्तर: - (1)

व्याख्या- वर्तमान काल की जिस क्रिया से कार्य का वर्तमान में निरन्तर होना पाया जाये वहाँ तात्कालिक वर्तमान काल होता है। इस काल के वाक्य के अंत में 'रहा है, रही है' आदि शब्द आते हैं।

- निम्न में से कौनसा शब्द बहुवचन में है ?

(1) भारतीय (2) अर्द्धांगिनी
(3) व्यवस्थापिका (4) नारियाँ
उत्तर : - (4)

- 'सती सावित्री, वीरांगना लक्ष्मीबाई, तपस्विनी उर्मिला की दिव्य झाँकियाँ प्रेरणा की स्रोत हैं और पुरुष चेतना और जागरण का संदेश देते हैं।' इस वाक्य में रेखांकित पद है ।

(1)संज्ञा (2) सर्वनाम
(3) क्रिया (4) विशेषण
उत्तर : - (4)

व्याख्या- सती, तपस्विनी व वीरांगना विशेषण शब्द हैं।

- निम्न में से स्त्रीलिंग शब्द नहीं है

(1) अर्द्धांगिनी (2) मूर्ति
(3) नारी (4) जीवन

उत्तर : - (4)
व्याख्या- जीवन पुल्लिंग शब्द है।

- 'न टूटने वाला' वाक्यांश के लिए एक शब्द है ?

(1) अक्षम (2) अटल
(3) अटूट (4) टूटनीय

उत्तर : - (3)
व्याख्या-जिसका क्षय न हो- अक्षय ।

- निम्न में से कौनसा शब्द शुद्ध है?

(1) शलाघनीय (2) अर्धांगिनी
(3) पूनित (4) सुवासित

(U)

Ultravires = शक्ति बाह्य
Unanimity = सर्व सम्मति/मतैक्य
Unavoidable = अपरिहार्य
Under Certificate of Posting = डाक प्रमाणित
Underlying = के नीचे/अन्तर्निहित
Undisbursed = अवितरित
Undue = अनुचित
Unforeseen = अदृष्ट
Unilateral = एकपक्षीय
Unstarred = अतारांकित
Unpaid = अदत्त
Upgrading = उन्नयन
Uphold = पुष्टकरना/मर्यादा बनाए रखना
Utilization certificate = उपयोग प्रमाणपत्र

(V)

Vague = अस्पष्ट/अनिश्चित
Valid = विधिमान्य
Vigilance = सर्तकता

अध्याय – 17
शिक्षण विधियाँ

- **भाषा शिक्षण, भाषा शिक्षण के उपागम, भाषायी दक्षता का विकास**

शिक्षण विधियाँ :-

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसका क्रियान्वयन पूर्व में निर्धारित उद्देश्यों को पाने के लिए किया जाता है। शिक्षक पूर्व में निर्धारित किये गए उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व अपनी विषय - वस्तु के प्रदर्शन को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षण विधियों का प्रयोग करता है।

जॉन डीवी के अनुसार "शिक्षण पद्धति वह विधि है जिसके द्वारा इस पठन सामग्री को व्यवस्थित करके परिणाम को प्राप्त करते हैं । '

वैस्ले ने कहा की "शिक्षण पद्धति शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिससे विद्यार्थियों को बोध व ज्ञान की प्राप्ति होती है । "

शिक्षण के संदर्भ में डेविस के कथन भी महत्वपूर्ण है- "विद्यार्थियों के कक्ष में जाने से पहले तैयारी कर लेनी चाहिए, क्योंकि शिक्षक की समृद्धि हेतु कोई बात इतनी बाधक नहीं है जितनी की शिक्षण की अपूर्ण तैयारी । "

एलन जैक्सन – एक शिक्षक को अपनी जिम्मेदारी को निभाने हेतु विभिन्न प्रकार की शिक्षण गतिविधियों को अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर सम्पन्न करनी होती हैं इन गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिए विधिवत नियोजन तथा कार्यान्वयन सम्बन्धी उचित प्रक्रियों से गुजरना होता है । यह सब करने के लिए शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य को कुछ निश्चित सोपानों या अवस्थाओं में व्यवस्थित करके आगे बढ़ाना होता है ।

एलन जैक्सन ने शिक्षण की एलन जैक्सन ने निम्न तीन अवस्थाएँ बताई है

1. शिक्षण पूर्व अवस्था - तैयारी या नियोजन की अवस्था

2. शिक्षणगत अवस्था- क्रियान्वयन या शिक्षण की अवस्था

3. शिक्षण उपरान्त अवस्था- पुनरावृत्ति या मूल्यांकन की अवस्था

भाषा शिक्षण की विधियाँ

भाषा शिक्षण एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण क्रिया है लेकिन उसके साथ – साथ यह आनंददायी क्रिया भी है। भाषा सीखने के मनोवैज्ञानिक चरण इस प्रकार है -

1. जिज्ञासा

2. प्रयत्न या तत्परता

3. अनुकरण

4. अभ्यास

शिक्षण में 'विधियाँ' शब्द का उपयोग पढ़ाने की उन प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है जिनकी सफलतापूर्ण समाप्ति के परिणामस्वरूप विद्यार्थी कुछ सीखता है या जिनके कारण शिक्षण प्रभावशाली होता है। 'विधियाँ' शिक्षक की अनेकों प्रक्रियाओं का एक समूह है। 'विधियाँ' क्रिया नहीं एक प्रक्रिया है।

श्रीमती एस. के. कोचर ने अपनी पुस्तक 'मेथड्स एण्ड टेकनीक्स ऑफ टीचिंग' में शिक्षण- विधियों के महत्व की अत्यन्त उत्तम व्याख्या की है। वे अपने लेखन में लिखती हैं," जिस प्रकार एक सैनिक को युद्ध के विभिन्न हथियारों का ज्ञान होना आवश्यक है उसी प्रकार एक शिक्षक को भी शिक्षण की विभिन्न विधियों का ज्ञान होना आवश्यक है। किस समय कौन सी विधि का प्रयोग किया जाए, यह उनकी निर्णय शक्ति पर निर्भर है। " इस प्रकार शिक्षण में शिक्षण विधियों का अत्यधिक महत्व है शिक्षण विधिया का ज्ञान सभी शिक्षकों को होना आवश्यक है। शिक्षण विधियों शिक्षा के उद्देश्यों तथा मूल्यों से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है और शिक्षा प्राप्त करने में सहायक होती है।

उत्तम शिक्षण विधि की विशेषताएँ

शिक्षण - कला में उपयोग में लायी जाने वाली उत्तम विधि में निम्न विशेषताएँ होती है -

- विधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थी को विषय - वस्तु के प्रति प्रेरित करे।
- विधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थियों को शिक्षा का सक्रिय सदस्य बनाए। विधियों में आवश्यक स्थानों पर विद्यार्थी द्वारा सम्पादन करने के लिए पर्याप्त क्रियाओं का होना आवश्यक है।
- विधियाँ सुनिश्चित एवं उपयोग करने योग्य हो।
- उत्तम विधियाँ कलात्मक व व्यक्तिगत होती हैं। वे शिक्षक को वांछित एवं अवांछित का ज्ञान कराती हैं।
- उत्तम विधियाँ विद्यार्थियों में वांछित बदलाव लाती हैं और उनमें अच्छी आदतों एवं बातों का निर्माण करती हैं।
- उत्तम-शिक्षण विधियाँ वे जो पूर्व - निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। शिक्षण विधि, शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होनी चाहिए।
- शिक्षण विधि छात्रों में वैज्ञानिक परिपेक्ष्य उत्पन्न करने वाली तथा वैज्ञानिक विधि से कार्य करने का प्रशिक्षण देने वाली हो।
- शिक्षण विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का पालन करने वाली हो अर्थात् छात्र की योग्यता, स्तर, , रुचि तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली हो।
- सजीव वातावरण बनाने में सहायता करता हो जो विद्यार्थियों को अन्त : क्रिया के अधिकतम अवसर देने वाली व उत्साहवर्धन वाली हो।
- करके सीखने के सिद्धान्त अर्थात् क्रियाशीलता पर आधारित होनी चाहिए।
- कम से कम समय लेने वाली तथा प्रभावी हो।
- शिक्षण विधि में व्यावहारिकता होनी चाहिए अर्थात् उसे सरलता से उपयोग में लिया जा सके। शिक्षण विधि को गतिशीलपूर्ण होना चाहिए न कि स्थिर।
- वह विद्यार्थियों में मानसिक गुणों के साथ - साथ शारीरिक, सामाजिक व संवेगात्मक गुणों का विकास करने वाली अर्थात् सर्वांगीण विकास के अवसर देनी वाली हो।
- शिक्षण विधि सहायक सामग्रियों के माध्यम से सरल व स्पष्टता लाने वाली हो जिससे शिक्षक व विद्यार्थी दोनों ईमानदारी व आत्मविश्वास से शिक्षण प्रक्रिया में भाग लें तथा यह विद्यार्थियों को रटने से विधियाँ ऐसी हों करने वाली हो।
- उत्तम विधियाँ विद्यार्थियों में मानसिक तर्क, निर्णय तथा विश्लेषण-शक्ति का विकास करती हैं तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पूर्ण मान्यता प्रदान करती हैं।

मनोवैज्ञानिक तो है; परन्तु इस विधि में भी निम्न कठिनाइयाँ हैं –

1. इस विधि द्वारा व्याकरण की केवल व्यावहारिक शिक्षा ही दी जाती है।

2. इसमें यह भी एक कठिनाई है कि यदि गद्य-शिक्षण के साथ-साथ ही व्याकरण की शिक्षा दी जाये तो कभी-कभी व्याकरण का शिक्षण प्रमुख बन जाता है और गद्य का शिक्षण गौण; अर्थात् बहुधा हम अपने मूल उद्देश्य से विचलित हो जाते हैं।

3. तीसरे, इस विधि से व्याकरण की शिक्षा देने का कोई तार्किक क्रम नहीं रहता।

अनुवाद विधि :

अनुवाद एक भाषा या भाषा भेद द्वारा अभिहित कथ्य को दूसरी भाषा या भाषा भेद में रूपांतरित करने की प्रक्रिया है। इस विधि में भाषा तो बदल जाती है, किंतु अर्थ के स्तर पर दोनों भाषाओं के कथ्य में समानता जरूरी है। अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है और इसके लिए अनुवादक को स्रोत भाषा (आधार भाषा) व लक्ष्य भाषा (सीखे जाने वाली भाषा) के हर, स्तर की बारीकियों से परिचित होना चाहिए। इसके लिए उसे भाषा विज्ञान की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

अनुवाद की एक निश्चित प्रक्रिया होती है, जिसके तीन चरण होते हैं - (i) पठन तथा पाठ - विश्लेषण (ii) संक्रमण, पुनर्गठन तथा (iii) लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति।

हिन्दी शिक्षण की विधियाँ

शिक्षण की दृष्टि से हिन्दी भाषा के क्षेत्र को निम्न तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है

1. गद्य शिक्षण
2. पद्य शिक्षण
3. व्याकरण शिक्षण

गद्य शिक्षण:

'गद्य' शब्द संस्कृत के 'गद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है- स्पष्ट कहना। गद्य में भाव को सरल विधि से स्पष्ट किया जाता है। गद्य को व्याकरणिक नियमों से पूर्ण रचना के रूप में देखा जाता है।

हिंदी में मुख्य गद्य विधाएँ इस प्रकार है –

1. निबंध 2. नाटक 3. कहानी 4. उपन्यास 5. एकांकी 6. जीवनी 7. आत्मकथा 8. संस्मरण 9. रेखाचित्र 10. रिपोर्ताज 11. डायरी 12. पत्र आदि।

भाषा शिक्षण के अंतर्गत गद्य शिक्षण के उद्देश

शिक्षण विधियों के चयन में उद्देश्य की भूमिका सर्वोपरि होती है। गद्य शिक्षण के उद्देश्यों को दो भागों में विभक्त किया जाता है -

1. सामान्य उद्देश्य 2. विशिष्ट उद्देश्य

गद्य शिक्षण के सामान्य उद्देश्य:

- भाषा सम्बन्धी ज्ञान की अभिवृद्धि करना तथा भाव व्यक्त करने की नवीन शैलियों से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों के शब्द - भंडार तथा सूक्ति-भंडार को बढ़ाना है।
- विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति (याद रखने की क्षमता) व सृजन-शक्ति (कलात्मक – शक्ति) का विकास करना।
- विद्यार्थियों के शब्दों के उच्चारण को शुद्ध करना तथा शुद्ध शब्द व शुद्ध वाक्यादि का ज्ञान प्राप्त करना।
- विद्यार्थियों में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न करना।
- विद्यार्थियों की मानसिक, तार्किक एवं बौद्धिक शक्तियों का विकास करना।
- पाठगत सुन्दर भावों तथा विचारों द्वारा चरित्र निर्माण में योग देना।
- विद्यार्थियों को व्याकरण के नियमों का बोध कराना।
- विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच को विकसित करना।
- विद्यार्थियों में सृजनशीलता व रचनात्मकता का विकास करना।

गद्य शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य:

गद्य पाठ विशेष के अध्यापन के विशिष्ट उद्देश्य पाठ में निहित मुख्य भाव या कलात्मक विशेषता पर

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "राजस्थान 3rd Grade Level – 2 (REET मुख्य परीक्षा)" में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)

FREE SAMPLE

राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE

संपर्क करें- 9887809083, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/3rd-grade-mains-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/hx3rcz

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO